श्रद्धेय श्री नृसिंह गुरु के प्रति

कीर्ति प्रकाश गुप्त

कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जिन्हे देखते ही श्रद्धा से मस्तक झुकाने को स्वतः स्फूर्त इच्छा जाग जाती है। उनका व्यक्तित्व निराडम्बर सरल और इतना सहज होता है कि हम उन्हें अपना निकट का अनुभव करने लगते है। मुझे स्मरण है १९५७ में जब मैं स्वर्गीय श्री नृसिंह गुरु से मिला तो कुछ ऐसी ही अनुभूति हुई। उस समय मुझे उडिया बोलनी नहीं आती थी किंतु मनुष्यों की जन्मजात भाषा जो ईंगितों और चेहेरे पर प्रकट हो गए भावों और भंगिमाओं द्वारा व्यक्त की जाती है ओर समझी जाती है उसी समय में मैने अपनी बात श्रद्धेय श्री गुरु तक संप्रेषित करदी। मुझे याद है उस समय मेरा परीचय कराने वाले श्रद्धेय प्रो. प्रह्लाद प्रधान यह कह कर हँस पडे 'आप दोनो तो एक दुसरे से परीचित जान पडते हैं।'

श्रद्धेय श्री गुरु के साथ मिलने का मन उसी भेंट के बाद प्रगाढ़ होता गया उनका सरल और सहज व्यवहार किसी को उनका भक्त बनाने के लिए यथेष्ठ था। कई बार मै उन्हे तुलसी जयान्ती। कवि सम्मेलन आदि आयोजनों मे निमंत्रण करने जाता था। उस समय वे किंचित मुस्कुराकर कह देते थे के किसी छात्र के द्वारा निमत्रण क्यों नहीं भेज दिया। मेरा उत्तर होता था आपके दर्शन का लाभ कहाँ मिलता उनका हाथ मुझे कंधे पर स्पर्श करके रोमांचित कर जाता था। उनका स्नेह ओर वह भी सहज स्नेह पाना आज के समय में असंभव नहीं तो अति कठिन अभीय है।

प्रायः उनसे रास्ते पर भेंट हुआ करती थी बिना पदत्राण वे नंगे पाँव ही घूमते फिरते थे। उस समय सम्बलपुर एक छोटा सा कस्बा था। न कोई सवारी गाड़ी और ना ही भीड़ भाड़ होती थी। मुझे याद है उनके लिए कई बार व्यवस्था करके कवि सम्मेलन में लाने के लिए जब भी मैने वाहन का प्रबंध किया मैने उनको पैदल ही आते पाया। मै अपनी लज्जा छुपाने के लिए संकुचित होने लगता तो वह मुस्कुरा कर कहते सब ठीक है ठीक है। दुसरे को समझना और उसको कोई असुविधा न हो यह उनके स्वभाव की विशेषता थी। मै प्रायः अपने सहकर्मियों से कहता था कि श्रद्धेय गुरुजी गाँधी जी की सत्य और अहिंसा के साकार अवतार हैं। 'पश्चिम उडिसा के गाँधी' का सम्बोधन उस समय उनके लिए प्रयुक्त नहीं होता था। जबकि वे उस समय उसके वास्तविक अधिकारी थे। हमारे समाज की यह विडम्बना ही कहि जायगी की महान व्यक्ति के चले जाने के वाद ही हम उसकी महानता को सम्मानित एवं प्रकाशित करने की चाह करते हैं।

मैने उन्हें सभाओं और साहित्यिक आयोजनों में पूरा समय देते हुए देखा था यद्यपि वे बहुत कर्मशील व्यस्त जीवन बाले व्यक्ति थे।

वे मुझे बुलाकर कहते कि अब आज्ञा दिजिए उस समय से अभि कृपा का अनुभव करते हुए उन्हे बाहरतक छोडने जाएगा उनकी हष्टि पुर्ण तथा समं थी । उनमे भेद भाव का लेशमात्र का भी नही था । उन्हे देखकर मुझे उनके संत और वह भी सच्ची संत होने का अबसोस होते लाएगा ।

बातों बातों में (यद्यपि मै दुरीकुरि उडिसा बोलयन्ताथः) उनसे समाचार पत्र समाज मे छपने वाली खवर मे विषय में चर्चा होती । उस समय उनकी टिप्पणी मुझे आज भी याद आती है । आय मेरा दैनिक समाज पढने का प्रचारक कीजए तो अव स्वतः उडिया लीख जाँयगें । उस समय उडिया दैनिकि मे सवसे अधिक पठनीय और मित्रों की सहायता से उडिया सीखता था मेरे मित्रों (सहकर्मियों) में श्री षलोचन पंडा, श्री गिरधारी गुरु आज महानुभाव थे । मेरा यह प्रयास रहता था कि मै उडिया में बात करूँ । कई बार मेरी मुलें लोगों के मनोरंजन का बिषय बनती थीं किंतु प्रतास करते करते मैने शिघ्र ही उडिया सिख ली । मेरी अशुद्दियों से यक्त उडिया सुनकर श्रृद्देय गुरु मुझे प्रोत्साहित करते थे । उनका स्वाभाविक उदारता उडिया सीखने ये मेरे बहुत काम आई ।

श्रृद्देय श्री गुरु जी बडे कर्मठ ओर सिद्दांत पर चलने वाले व्यक्ति थे । समाज के लिए उनका पाश्चिक देखते ही बनता था । पश्चिम उडीसा कें उनके अनथक प्रयास ने समाज का विचरण बहुत बढा दिया था । एक बह मै मासिक चंदा समझकर नहिं पहुँचा अथबा श्रृद्देय गुरुजी ने नियमानुसारे मुझे रोक दिया और उसके बाद मै वार्षिक चंदा देने लगा । अपने सिद्दांतो का पालन करने मे मैने उनका जैसा व्यक्ति नहिं देखा अभि अधुतों की बता नयी बात अहु कभी अस्पताल सबी झुग्गी झोचडियों मे उनकी उपस्थिात मैने देखी है । वे कृपक वर्ग से भी प्रगाढता से जुडे हुए थे । गाँधीवादी होने के कारण मैने कम्युनिस्टों की शैली मे उनको गरिबों और पिछडे लोगों की युनियन बाजी मे पडते नहीं देखा । वे स्वयं अपने स्तर पर अपने त्यागमय रात सेवा भाव भरे आचरण के द्वारा ही उनके मसीहा बने हुए थे ।

आज लगभग ४५–४६ वर्ष बाद जव मै उनहें उनकी जन्मशताब्दी के दिन मे स्मरण कर अपने श्रृद्दा सुमन समर्पित कर रहा हुँ तो उनका एक रेखाचित्र मानसपरल पर बरबस उभर कर आ रहा है । एक नये पाँव, कर्मठ कर्मयोगी खेत खद्दर की धोति मे अधलिपटा जो बिनम्रता सहजता और आत्मीपता का भाव लिए करूणामयी मुसबात लि[illegible] रहा है । वही बस वही श्रृद्देय नृसिंह गुरु जी [illegible] गंभीर सरल चेहरा याद आ रहा है ओर उस महान के आने मै अकिंचत प्रयास का मुद्दा ये भुख गया हुँ ।